| Janeiro | Fevereiro | Março | | Abril | Maio | Junho | | Julho | Agosto | Setembro |
|-------------|-----------|------------|----|-------------|------------|------------------------|----|-------------|-------------|-------------|
| 1 Gn 1-3 | Ex 14-17 | Dt 7-9 | 1 | I Sm 25-28 | Sl 64-66 | Pv 4-7 | 1 | Os 1-4 | Sf 1-3 | II Cr 7-9 |
| 2 Gn 4-6 | Ex 18-20 | Dt 10-12 | 2 | I Sm 29-31 | Sl 67-69 | Pv 8-11 | 2 | Os 5-7 | Hc 1-3 | II Cr 10-13 |
| 3 Gn 7-9 | Ex 21-24 | Dt 13-16 | 3 | II Sm 1-4 | S1 70-72 | Pv 12-14 | 3 | Os 8-10 | II Rs 22-25 | II Cr 14-16 |
| 4 Gn 10-11 | Ex 25-27 | Dt 17-19 | 4 | II Sm 5-8 | S1 73-75 | Pv 115-18 | 4 | Os 11-14 | Ob / Jr 1-2 | II Cr 17-19 |
| 5 Jó 1-4 | Ex 28-31 | Dt 20-22 | 5 | II Sm 9-12 | Sl 76-78 | Pv 19-21 | 5 | II Rs 18-19 | Jr 3-5 | II Cr 20-22 |
| 6 Jó 5-7 | Ex 32-34 | Dt 23-25 | 6 | II Sm 13-15 | SI 79-81 | Pv 22-24 | 6 | Is 1-3 | Jr 6-8 | II Cr 23-25 |
| 7 Jó 8-10 | Ex 35-37 | Dt 26-28 | 7 | II Sm 16-18 | S1 82-84 | Pv 25-28 | 7 | Is 4-6 | Jr 9-12 | II Cr 26-29 |
| 8 Jó 11-13 | Ex 38-40 | Dt 29-31 | 8 | II Sm 19-21 | SI 85-87 | Pv 29-31 | 8 | Is 7-9 | Jr 13-16 | II Cr 30-32 |
| 9 Jó 14-17 | Lv 1-4 | Dt 32-34 | 9 | II Sm 22-24 | S1 88-90 | Ec 1-3 | 9 | Is 10-12 | Jr 17-20 | II Cr 33-36 |
| 10 Jó 18-20 | Lv 5-7 | Js 1-3 | 10 | Sl 1-3 | SI 91-93 | Ec 4-6 | 10 | Is 13-15 | Jr 21-23 | Ez 1-3 |
| 11 Jó 21-24 | Lv 8-10 | Js 4-6 | 11 | Sl 4-6 | S1 94-96 | Ec 7-9 | 11 | Is 16-18 | Jr 24-26 | Ez 4-7 |
| 12 Jó 25-27 | Lv 11-13 | Js 7-9 | 12 | S1 7-9 | S1 97-99 | Ec 10-12 | 12 | Is 19-21 | Jr 27-29 | Ez 8-11 |
| 13 Jó 28-31 | Lv 14-16 | Js 10-12 | 13 | Sl 10-12 | Sl 100-102 | Ct 1-4 | 13 | Is 22-24 | Jr 30-32 | Ez 12-14 |
| 14 Jó 32-34 | Lv 17-19 | Js 13-15 | 14 | Sl 13-15 | Sl 103-105 | Ct 5-8 | 14 | Is 25-27 | Jr 33-36 | Ez 15-18 |
| 15 Jó 35-38 | Lv 20-23 | Js 16-18 | 15 | Sl 16-18 | Sl 106-108 | I Rs 5-7 | 15 | Is 28-30 | Jr 37-39 | Ez 19-21 |
| 16 Jó 39-42 | Lv 24-27 | Js 19-21 | 16 | Sl 19-21 | Sl 109-111 | I Rs 8-10 | 16 | Is 31-33 | Jr 40-42 | Ez 22-24 |
| 17 Gn 12-15 | Nm 1-3 | Js 22-24 | 17 | S1 22-24 | Sl 112-114 | I Rs 11-13 | 17 | Is 34-36 | Jr 43-46 | Ez 25-27 |
| 18 Gn 16-19 | Nm 4-6 | Jz 1-4 | 18 | S1 25-27 | Sl 115-118 | I Rs 14-16 | 18 | Is 37-39 | Jr 47-49 | Ez 28-30 |
| 19 Gn 20-22 | Nm 7-10 | Jz 5-8 | 19 | S1 28-30 | Sl 119 | I Rs 17-19 | 19 | Is 40-42 | Jr 50-52 | Ez 31-33 |
| 20 Gn 23-26 | Nm 11-14 | Jz 9-12 | 20 | Sl 31-33 | S1 120-123 | I Rs 20-22 | 20 | Is 43-45 | Lm 1-5 | Ez 34-36 |
| 21 Gn 27-29 | Nm 15-17 | Jz 13-15 | 21 | Sl 34-36 | Sl 124-126 | II Rs 1-3 | 21 | Is 46-48 | I Cr 1-3 | Ez 37-39 |
| 22 Gn 30-32 | Nm 18-20 | Jz 16-18 | 22 | S1 37-39 | SI 127-129 | II Rs 4-6 | 22 | Is 49-51 | I Cr 4-6 | Ez 40-42 |
| 23 Gn 33-36 | Nm 21-24 | Jz 19-21 | 23 | S1 40-42 | Sl 130-132 | II Rs 7-10 | 23 | Is 52-54 | I Cr 7-9 | Ez 43-45 |
| 24 Gn 37-39 | Nm 25-27 | Rute 1-4 | 24 | S1 43-45 | SI 133-135 | II Rs 11 - 14.20 | 24 | Is 55-57 | I Cr 10-13 | Ez 46-48 |
| 25 Gn 40-42 | Nm 28-30 | I Sm 1-3 | 25 | Sl 46-48 | Sl 136-138 | J1 1-3 | 25 | Is 56-60 | I Cr 14-16 | Dn 1-3 |
| 26 Gn 43-46 | Nm 31-33 | I Sm 4-7 | 26 | Sl 49-51 | Sl 139-141 | II Rs 14.21-25/ Jn 1-4 | 26 | Is 61-63 | I Cr 17-19 | Dn 4-6 |
| 27 Gn 47-50 | Nm 34-36 | I Sm 8-10 | 27 | S1 52-54 | Sl 142-144 | II Rs 14.26-29/ Am 1-3 | 27 | Is 64-66 | I Cr 20-23 | Dn 7-9 |
| 28 Ex 1-4 | Dt 1-3 | I Sm 11-13 | 28 | SI 55-57 | SI 145-147 | Am 4-6 | 28 | Mq 1-4 | I Cr 24-26 | Dn 10-12 |
| 29 Ex 5-7 | Dt 4-6 | I Sm 14-16 | 29 | Sl 58-60 | Sl 148-150 | Am 7-9 | 29 | Mq 5-7 | I Cr 27-29 | Et 1-3 |
| 30 Ex 8-10 | | I Sm 17-19 | | Sl 61-63 | I Rs 1-4 | II Rs 15-17 | 30 | Na 1-3 | II Cr 1-3 | Et 4-7 |
| 31 Ex 11-13 | | I Sm 20-24 | 31 | | Pv 1-3 | | 31 | II Rs 20-21 | II Cr 4-6 | |

| | Outubro | Novembro | Dezembro | | |
|----|------------|-----------------------------|----------------|--|--|
| 1 | Et 8-10 | Lc 18-21 | Rm 12-16 | | |
| 2 | Ed 1-4 | Lc 22-24 | At 20.3- 22.30 | | |
| 3 | Ag/ Zc 1-2 | Jo 1-3 | At 23-25 | | |
| 4 | Zc 3-6 | Jo 4-6 | At 26-28 | | |
| 5 | Zc 7-10 | Jo 7-10 | Ef 1-3 | | |
| 6 | Zc 11-13 | Jo 11-13 | Ef 4-6 | | |
| 7 | Ed 5-7 | Jo 14-17 | Fp 1-4 | | |
| 8 | Ed 8-10 | Jo 18-21 | Cl 1-4 | | |
| 9 | Ne 1-3 | At 1-3 | Hb 1-4 | | |
| 10 | Ne 4-6 | At 4-6 | Hb 5-7 | | |
| 11 | Ne 7-9 | At 7-9 | Hb 8-10 | | |
| 12 | Ne 10-13 | At 10-11 | Hb 11-13 | | |
| 13 | Ml 1-4 | Tg 1-2 | Filemon | | |
| 14 | Mt 1-4 | Tg 3-5 | I Pe 1-2 | | |
| 15 | Mt 5-7 | At 12-14/Gl 1-3 | I Pe 3-5 | | |
| 16 | Mt 8-11 | Gl 4-6 | II Pe 1-3 | | |
| 17 | Mt 12-15 | At 15-18.11 | I Tm 1-3 | | |
| 18 | Mt 16-19 | I Ts 1-5 | I Tm 4-6 | | |
| 19 | Mt 20-22 | II Ts 1-3/ At 18.12-19.10 | Tt 1-3 | | |
| 20 | Mt 23-25 | I Co 1-4 | II Tm 1-4 | | |
| 21 | Mt 26-28 | I Co 5-8 | I Jo 1-2 | | |
| 22 | Mc 1-3 | I Co 9-12 | I Jo 3-5 | | |
| 23 | Mc 4-6 | I Co 13-16 | II / III João | | |
| 24 | Mc 7-10 | At 19.11 - 20.1 / II Co 1-3 | Judas | | |
| 25 | Mc 11-13 | II Co 4-6 | Ap 1-3 | | |
| 26 | Mc 14-16 | II Co 7-9 | Ap 4-6 | | |
| 27 | Lc 1-3 | II Co 10-13 | Ap 7-9 | | |
| 28 | Lc 4-6 | At 20.2/ Rm 1-4 | Ap 10-12 | | |
| 29 | Lc 7-9 | Rm 5-8 | Ap 13-15 | | |
| 30 | Lc 10-13 | Rm 9-11 | Ap 16-18 | | |
| 31 | Lc 14-17 | | Ap 19-22 | | |

15 Razões para ler a Bíblia

Para livrar-se da ansiedade e ter paz (Salmo 119:165)

- **2** Para ter direção quando a vida estiver fora de controle (Salmo 19:7-8)
- **3** Para ter direção e conhecer a vontade de Deus (Salmo 119:105)
- 4 Para experimentar a cura e a libertação (Salmo 107:20)
- **5** Para crescer no Senhor (I Pedro 2:2)
- **6** Para ser fortalecido, consolado e ter esperança (Salmo 119:28, 50, 114)
- **7** Para moldar-se a si mesmo e a sua vida corretamente (Salmo 119:11)
- 8 Para poder enxergar claramente (Salmo 119:130)
- 9 Para conhecer as intenções do seu coração (Hebreus 4:12)
- **10** Para desenvolver a sua fé (Romanos 10:17)
- 11 Para ter alegria (Salmo 16:11)
- 12 Para compreender o poder de Deus (João 1:3)
- 13 Para dar vida à vida (Salmo 119:50)
- 14 Para discernir o bem do mal (Salmo 119:101-102)
- **15** Para compreender o amor de Deus por você (João 1:14)

OBS:. A fim de incentivar os irmãos a lerem toda a Bíblia em 1 ano, a ADCA realiza entres aqueles que cumprem o desafio, o sorteio de uma Bíblia de Estudo ao final de cada ano.

ADCA - Assembleia de Deus Central em Araguari Rua Natal Mujali, 297 - Centro

VOLTEMOS AO VERDADEIRO EVANGELHO DE CRISTO

(GÁLATAS 1.6-9)

Uma das coisas que nos impressiona é ver como Jesus se preocupou em nos avisar acerca dos acontecimentos futuros. Ele foi pontual, claro e não nos deixou na ignorância. Observe que o autor do texto, bem alinhado com as escrituras, nos mostra o perigo dos falsos evangelhos e nos aponta o caminho a seguir... Pregar "outro evangelho" conduz à maldicão. Admira-me que estejais passando tão depressa daquele que vos chamou na graça de Cristo para outro evangelho, o qual não é outro, senão que há alguns que vos perturbam e guerem perverter o evangelho de Cristo. Mas, ainda que nós ou mesmo um anjo vindo do céu vos pregue evangelho que vá além do que vos temos pregado, seja anátema.. A salvação é somente para quem faz a vontade de Deus, e não para quem apenas diz que acredita n'Ele: "Nem todo aquele que me diz: 'Senhor, Senhor', entrará no Reino dos céus, mas apenas aquele que faz a vontade de meu Pai que está nos céus. Muitos me dirão naquele dia: 'Senhor, Senhor, não profetizamos nós em teu nome? Em teu nome não expulsamos demônios e não realizamos muitos milagres?' Então eu lhes direi claramente: 'Nunca os conheci. Afastem-se de mim vocês, que praticam o mal!". Mateus 7:21-23. Medite em qual evangelho você está seguindo.

Pr. Jonas de Oliveira.

Compartilhe com um irmão sobre esta palavra.

JESUS virá, quando muitos estarão discutindo e

debatendo sobre a veracidade do evangelho de Cristo.

Será como nos dias de Noé, para muitos será dia de

trevas e não de luz. Feliz Ano Novo no Evangelho de Cristo.

